बालू की दीवार

सूर्य प्रकाशन मन्दिर

बालू की दीवार

[ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित उपन्यास]

लेखक
श्रीराम शर्मा 'राम'



प्रभात प्रकाशन
दिल्ली ❁ मथुरा

कि इन फूलों की खुशबू कितनी मादक है, मन को कैसी बहती है' ''मी
तुम'' सच जैनाबादी तुम्हारा इस तरह से आम तोड़ना, यों मचलना
यों थिरकना यों उचकना क्यों मुझे कभी देखने को मिलता।'

जैनाबादी के श्वेत मोती जैसे दाँतों पर मुस्कान बिखर गई। उ
कहा—'शाहजादे, क्या कविता के आँगन में भी कदम बढ़ा रहे हैं। क्
क्या कहना चाहते हैं ?

इतना सुनना था कि औरंगजेब और आगे बढ़ा। वह जैनाबादी
आँखों में आँखें डाल कर बोला—'जैनाबादी मुझे लगता है तेरे सामने मैं
नहीं हूँ। तू सब कुछ है। तूने आज पलभर में मुझे जो कुछ दिया वि
इस जरा सी अँगड़ाई ने जो कहर ढाया यह सब मेरे लिए नया
हाँ, जैनाबादी यह शाहजादा औरंगजेब आज से तेरा है तेरे ही प्य
का प्यासा ।

औरंगजेब की बात सुनते ही जैनाबादी के मन में आया कि वह
का ठहाका लगाये। उसने सोचा कि अपने मन में आई हुई बात को कहदे
पर ऐसा न किया। शायद वह इतना साहस नहीं जुटा सकी। फिर
उसने कहा—'आहो शाहजादे ! तुम भी औरत का रूप देखते हो ! तुम
मानते हो कि औरत शराब की तरह मादक इसकी आँखें मादक
के मन को हिला देने वाला इसका यौवन'' न शाहजादे, तुम्हारा य
रास्ता नहीं। तुम तो कुरान पढ़ते हो। मौलवी से धर्म-अधर्म की चर्चा कर
हो। युद्ध करना इन्सान के खून में अपनी तलवार रंगना तुम अपने जीव
का सबसे बड़ा कर्म मानते हो। सच बोलो ।

औरंगजेब ने कहा—'तुम ठीक कहती हो। मैंने अभी तक यह
समझा। खुदा के इस जहान में मैं इसके अलावा और कुछ नहीं देख पाता
पर एक तू ''तुम'' ''सच जैनाबादी ! मुझ लगता है, मेरी छाती में
भी दर्द है मेरे कलेजे में भी प्यास है औरत की प्यास ''उसके का
प्यास'' 'तुम्हें देखकर यही तो मैंने समझा है।

आसमान से आग बरस रही थी। उमस के मारे पक्षी परेशान थे, पेड़ सूखने लगे थे। पर आसमान का रंग देखते-देखते बदला चारों ओर काले-काले बादल छाये और धरती पर नन्हीं-नन्हीं फुहारें गिरने लगीं। शाहजादा औरंगजेब अपने महल से निकल कर शाही बाग की ओर चल दिया। सुहावने मौसम से प्यार करना उसे भी आता था। वह भी उस रंगीन और मस्त कर देने वाली सावन की बहार का आनन्द लेना चाहता था। बाग में पहुँचते ही उसका आकुल मन खिल उठा। उसने देखा इन्सान की तरह पक्षी भी आसमान से गिरती हुई फुहारों का स्वागत कर रहे थे — कुछ गा रहे थे। कहीं मोर नाच रहे थे और कहीं आम के पेड़ पर बैठी हुई कोयल कूक रही थी। अजीब मस्त बहार थी। फलों से लदे पेड़ धरती पर झुके जा रहे थे। जुही मौलसिरी चमेली और चम्पा के फूल सुगन्ध लुटा रहे थे। गुलाब के बड़े-बड़े फूल हवा का स्पर्श पाकर ऐसे खिल रहे थे मानो उसी दिन सुख का अनुभव कर सके थे।

ऐसे सुन्दर, मोहक और मनभावने समय में शाहजादा औरंगजेब जब बाग के एक किनारे पहुँचा, मन में उठती हुई मस्ती के साथ वह मचल उठा। उसने देखा कि दूर पर झुके हुए आम की डाल के नीचे शाही महल में रहने वाली उसकी परिचिता हीराबाई, जो जैनाबादी के नाम से भी पुकारी जाती थी आम को तोड़ने के लिये जिस अदा से उचक रही थी वह उसके मन को भा गई। दबे पाँव उसके पीछे जाकर बोला—'जैनाबादी !

जैनाबादी चौंक पड़ी, छुईमुई की तरह अपने में ही सिमट गई। पल भर में उसके मुँह से निकला— शाहजादे तुम ?'

औरंगजेब और आगे बढ़ा बोला 'हाँ जैनाबादी ! आज मेरा भी मन कर आया कि इस सुहावने मौसम की बहार ल । मैं भी यहाँ आकर देखूँ"

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन
२०५, चावड़ी बाजार
दिल्ली

•

लेखक :
श्रीराम शर्मा 'राम'

•

प्रथम संस्करण
१९६१

•

मुद्रक
गुलाबसिंह यादव
आगरा फाइन आर्ट प्रेस
मदीरपाड़ा, आगरा

•

•

मूल्य :
तीन रुपया

आसमान से आग बरस रही थी। तपन के मारे पक्षी परेशान थे, पेड़ सूखने लगे थे। पर आसमान का रंग देखते-देखते सहसा चारों ओर काले-काले बादल छाये और धरती पर नन्हीं-नन्हीं फुहारें गिरने लगीं। शाहजादा औरंगजेब अपने महल से निकल कर शाही बाग की ओर चल दिया। सुहावने मौसम से प्यार करना उसे भी आता था। वह भी उस रंगीन और मस्त कर देने वाली सावन की बहार का आनन्द लेना चाहता था। बाग में पहुँचते ही उसका आकुल मन खिल उठा। उसने देखा इन्सान की तरह पक्षी भी आसमान से गिरती हुई फुहारों का स्वागत कर रहे थे— कुछ गा रहे थे। कहीं मोर नाच रहे थे और कहीं आम के पेड़ पर बैठी हुई कोयल कूक रही थी। अजीब मस्त बहार थी। फलों से लदे पेड़ धरती पर झुके जा रहे थे। जुही मौलसिरी चमेली और चम्पा के फूल सुगन्ध लुटा रहे थे। गुलाब के बड़े-बड़े फूल हवा का स्पर्श पाकर ऐसे खिलकर रह थे मानो उसी दिन सुख का अनुभव कर सके थे।

ऐसे सुन्दर मोहक और मनभावने समय में शाहजादा औरंगजेब बाग के एक किनारे पहुँचा मन में उठती हुई मस्ती के साथ वह मचल उठा। उसने देखा कि दूर पर झुके हुए आम की डाल के नीचे शाही महल में रहने वाली उसकी परिचिता हीराबाई, जो जैनाबादी के नाम से भी पुकारी जाती थी आम को तोड़ने के लिए जिस अदा से उचक रही थी वह उसके मन को भा गई। दबे पाँव उसके पीछे आकर बोला—'जैनाबादी !

जैनाबादी चौंक गयी छुईमुई की तरह अपने में ही सिमट गई। पल भर में उसके मुँह से निकला— शाहजादे तुम ?

औरंगजेब और आगे बढ़ा बोला 'हाँ जैनाबादी ! आज मेरा भी मन कर आया कि इस सुहावने मौसम की बहार लूँ। मैं भी यहाँ आकर देखूँ

कि इन फूलों की खुशबू कितनी मादक है, मन को कैसी लगती है' । तुम सच, जैनाबादी तुम्हारा इस तरह से आम तोड़ना यों मचक यों थिरकना यों चमकना क्यों मुझ कभी देखने को मिलता ।'

जैनाबादी के श्वेत मोती जैसे दांतों पर मुस्कान बिखर गई । कहा—'शाहजादे क्या कविता के आंगन में भी कदम बढ़ा रहे हैं । क क्या कहना चाहते हैं ?

इतना सुनना था कि औरंगजेब और आगे बढ़ा । वह जैनाबादी आंखों में आँखें डाल कर बोला—'जैनाबादी मुझे लगता है तेरे सामने मैं नहीं हूं । तू सब कुछ है । तुझे आज पलभर में मुझे जो कुछ दिया हि इस जरा सी अंगड़ाई ने जो कहर ढाया यह सब मेरे लिए नया हाँ, जैनाबादी, यह शाहजादा औरंगजेब आज से तेरा है तेरे ही म का प्यासा ।

औरंगजेब की बात सुनते ही जैनाबादी के मन में आया कि वह का ठहाका लगाए । उसने सोचा कि अपने मन में आई हुई बात को कहे पर ऐसा न किया । शायद वह इतना साहस नहीं जुटा सकी । फिर उसने कहा—'ओहो शाहजादे ! तुम भी औरत का रूप देखते हो ! तुम मानते हो कि औरत शराब की तरह मादक इसकी आँखें माद के मन की हिंसा देने वाला इसका यौवन' न शाहजादे, तुम्हारा रास्ता नहीं । तुम तो कुरान पढ़ते हो । मौलवी से धर्म-अधर्म की चर्चा क हो । युद्ध करना इस्लाम के खून में अपनी तलवार रंगना तुम अपने जीव का सबसे बड़ा कर्म मानते हो । सच बोलो ।

औरंगजेब ने कहा—'तुम ठीक कहती हो । मैंने अभी तक म समझा । खुदा के इस जहान में, मैं इसके अलावा और कुछ नहीं देख पाता पर एक तू' 'तुम 'सच जैनाबादी ! मुझे लगता है मेरी छाती भीष की दर्द है, मेरे कलेजे में भी प्यास है औरत की प्यास उसके की प्यास 'तुम्हें देखकर यही तो मैंने समझा है ।

जैनाबादी हँस दी मानो हँसना बिरकना और मचलना ही उसका भाव था। कदाचित् वह नहीं समझ पा रही थी वह इतनी नादान बन गी थी कि जवान औरंगजेब ज्यों-ज्यों उसकी उन अदाओं को देखता उसकी ओर बढ़ता जाता। मानो उसने अब तक जो कुछ देखा और समझा था, बेकार था झूठा था औरंगजेब के लिए निःसार था क्योंकि उसने देखा कि वह अपने मजबूत हाथ में पकड़ी हुई तलवार से भले ही अपने दुश्मन का सिर काट ले अपने तेज भाले से किसी इन्सान की छाती फाड़ दे परन्तु यह औरत, यह जैनाबादी उससे भी अधिक समर्थ और बलवान है। इसके पास जैसे दुआ की सबसे बड़ी ताकत है। यह खूँखार भेड़िये को भी अपने बस में करना जानती है। इसके पास रूप है जवानी है। इसके मन में लाज है जीवन में थिरकन है शराब के नशे जैसी मादकता है। सच नहीं तो आदमी को मदहोश करने की ताकत रखती है। लेकिन मन में इतना जानकर भी औरंगजेब ने अपने होंठ नहीं खोले। वह अपनी तृषित और आकुल आँखों से उस सुभाषिनी जैनाबादी की ओर देखता रहा। कभी-कभी ऊपर पेड़ पर लगे आमों की ओर देखने लगा।

तभी जैनाबादी ने कहा—'शहजादे तुम सचमुच बहादुर हो साहसी हो। उस दिन शाही महल की बेगमें और बाँदियाँ कहती थीं कि तुम्हीं इस मुल्क के बादशाह बनोगे। तुम अपनी तलवार से अपना रास्ता साफ कर सकोगे।

औरंगजेब ने इतनी बात सुनी तो हँसा नहीं, गम्भीर भी नहीं हुआ अपितु मुस्कराता हुआ बोला—'जैनाबादी देख तो इस पेड़ के आमों को। कैसे गदरा रहे हैं। किस तरह रस से भरे झुके जा रहे हैं।' उसने आगे कहा—'इस शाही बाग में मैं बहुत दिन से नहीं आया। खुदा जाने, आज किस तरह आ गया। यहाँ आया तो ।

जैनाबादी हँस दी—'आये तो इस जैनाबादी से ।

'हाँ, जैनाबादी! तुम ठीक कहने वाली हो। मैंने आज तुम्हें क्या देखा सचमुच, जिन्दगी का एक चैन, एक सुख मुझे यहाँ आकर मिल गया।

वह बोला—'तुम कहती हो कि मैं तलवार से आदमियों के सिर काटता हूँ। मैं दिलेरों से लड़ता हूँ। पर जैनाबादी इसका राज़ तो सिर्फ इतना है कि मैं इस जिन्दगी को अपनी नहीं मानता। खुदा की देन समझता हूँ। वह ही मेरे इस जिस्म का मालिक है। उस खुदा की मर्जी के बगैर मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता।

जैनाबादी बोली—'तुम ठीक कहते हो शहज़ादे। उस दिन जब खूनी हाथी तुम पर झपटा था तब बाहर की ओर उठा ही शाही महल में भी सन्नाटा छा गया था। उसी दिन सभी ने तुम्हारी बहादुरी के बारे बातें कही थीं। बादशाह सलामत कहते थे कि मेरा यह बेटा बहादुरी में अपना नाम रोशन करेगा। उसने कहा—'पर शहज़ादे तुम्हें भी उस समय कुछ लगा कि खूनी हाथी को अपनी तरफ बढ़ता हुआ देखकर भी अपना घोड़ा वहां से नहीं भगाया। बोलो क्या उस हाथी से तुम्हें डर नहीं लगा था?'

औरंगज़ेब सहज भाव से मुस्करा दिया। बोला—'री जैनाबादी! जानती तो है तू कि मैं एक बादशाह की औलाद हूँ। लड़ना मेरा काम है। सैनिक के शिविर में जिन्दगी बिताना मुझे सिखाया गया है। सोच तो ऐसे डरकर क्या मैं अपनी जिन्दगी में कुछ काम कर सकता हूँ। सचमुच उस खूनी हाथी को देख कर उसे अपनी ओर बढ़ता हुआ पाकर मैं यह जानने के लिए तैयार हो गया था कि देखूं कि मैं कितना मुखलिस हूँ और कितना दिलेर।

जैनाबादी ने देखा कि यह कहते-कहते औरंगज़ेब के मुँह पर तेज दमक आया था। उसमें जो अदम्य उत्साह शौर्य और आत्म-सम्मान का भाव निहित था वह पग मारने में बाजी का उपयोग होने के साथ बाहर निकल आया। जैनाबदी ने देखा कि वही शहज़ादा उससे प्रेम की याचना कर रहा था। वह जैनाबादी के रूप और रस में डूब गया था। तब इतना देख पाते ही उस मदहोश कमनीय और रस भरी जैनाबादी के मन में आया कि वह दो कदम आगे बढ़े और अपने मधुर होठ औरंगज़ेब के उन सूखे होठों पर रख कर कह दे—मेरे प्राण मेरे प्यारे।

किन्तु इतना|वह देखा और कर देना भी जैनाबादी की सामर्थ्य से

बहादुर था। क्योंकि वह इस बात को सुन चुकी थी देख भी चुकी थी कि शहजादा औरंगजेब न शराब पीता था न शाही महल की औरतों में अधिक उठता-बैठता था। वह अपने सभी भाइयों में निराला था।

तभी शहजादे ने खामोशी को भंग करते हुए कहा 'वह खूनी हाथी वाली घटना मेरे जीवन की महत्वपूर्ण बात थी जैनाबादी! उस दिन मैंने सीखा कि दुश्मन से डरना नहीं चाहिये। दुश्मन कितना बलवान है यह समझना चाहिये।

जैनाबादी मुस्करा दी। क्योंकि इतना उसने सहज ही समझ लिया कि वह शहजादा औरंगजेब अपनी तारीफ सुनकर स्वयं गर्वित हो उठा है। अब मानव प्रशंसक बनने चला है मूर्ख!

किन्तु औरंगजेब ने फिर कहा 'आगे लड़ने वाले युद्धों के लिए वह मेरी एक भूमिका थी। वह एक ऐसा सबक था कि जो मुझे इस जिन्दगी की पाठशाला में ही पढ़ने को मिल गया। बस उससे मेरा बड़ा लाभ हुआ।

हँस कर जैनाबादी ने कहा—'अर्थात् तुम गला कटाकर मौत का सबक लेना। वह बोली—शहजादे वह तुम्हारा खतरनाक खेल था। जिन्दगी की पाठशाला का ऐसा सबक न उस्ताद को जिन्दा रखता है न शागिर्द को! अगर सिपहसालार शायस्ताखां और शहजादा शुजा अपना घोड़ा बढ़ाकर उस खूंखार हाथी को मारने में सफल न होते तो क्या तुम बच सकते थे? न हर्गिज नहीं तुम्हें तो हाथी ने घोड़े से नीचे पटक दिया था।

यह बात सुनकर औरंगजेब न हँसा न मुस्कराया मानो उसका उत्साह गिर गया। उसमें नारी के जीवन को समझने का जो एक भाव पैदा हुआ वह मानो धूम-धाम मिटने लगा तथापि मौसम और अधिक सुहावना हो गया था। पक्षियों का कलरव भी बढ़ गया था। किन्तु औरंगजेब जैसे जैनाबादी नाम की उस परी के पास आकर भी खाली हाथ लौट जाने वाला था। तभी उसने एक गहरी सांस लेकर कहा—'हाँ जैनाबादी! तुम ठीक कहती हो। मेरा वह खेल खतरनाक था। जिन लोगों ने मेरी मदद की मैं उनका एहसानमन्द रहा पर कहा न मैंने ऐसे ही मसलों पर मैं

खुदा को देखना चाहता हूँ। मैं समझना चाहता हूँ कि वह कहाँ है किस किस स्थान में है।

लेकिन जैनाबादी का सबसे हँसना ही काम था। वह हँसते हुए बोली—'भोले शहजादे! तुम सचमुच ही अजीब हो! प्यार करने के काबिल हो! हाँ तुम मेरे'

'जैनाबादी

'शहजादे

तभी औरंगजेब ने आम की डाल पर बैठी कोयल का स्वर सुना। उसने मुँह ऊपर उठाया और कहा—देख जैनाबादी यह कोयल हमारी गवाह है।

जैनाबादी खिलखिला पड़ी—'किस बात की गवाह है यह काली कोयल ?

औरंगजेब का मन मचल उठा। आगे बढ़ कर उसने जैनाबादी का हाथ पकड़ लिया और कहा—'यह काली कोयल अपने स्वर में मिठास रखती है। यह बताती है हम दोनों को कि हम   'हमारी यह जिन्दगी   ।

जैनाबादी का सिर झुक गया और बरबस उसके मुँह से निकल पड़ा शहजादे, तुम्हारा यह फैसला ठीक नहीं है। कब मैं कहाँ और तुम कहाँ।

औरंगजेब हँसा और इतने जोर से हँसा कि मानो उस शाही बाग का एक-एक पेड़ और एक-एक फूल बरबस ही उस हँसी में सम्मिलित हो गया। मानो उस बाग के पेड़ों की तरह जैनाबादी की तरह, स्वयं औरंगजेब भी मदमस्त होकर अपनी सीमा से दूर चला गया। फलस्वरूप, उसी अवस्था में उसने कहा—'ऐ जैनाबादी देख तुझे खुदा बन्दे ने दूर किया है यह जवानी बख्शी है यह प्यासा औरंगजेब तुमसे भी कुछ पाना चाहता है। जानती तो है ना इस संसार में सभी एक-दूसरे से कुछ लेते हैं कुछ देते हैं। सो तू भी'   हाँ जैनाबादी!

जैनाबादी की पलकें उस समय कुछ बोझिल हो उठी थीं। उसके

गालों की सुर्खी और भी उभर आई। ऐसा लगा जैसे यौवन का भार उससे सँभाला नहीं जा रहा है।

तभी औरंगजेब ने उसकी ठोड़ी ऊपर उठाई। वह उसकी ओर झुका। जैनाबादी की गरम साँसें उसे अपने चेहरे पर महसूस हुईं। उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि जैनाबादी के साथ वह भी चौंक गया। उन्होंने देखा कि बाग में उनके अलावा और भी कोई था जो उनके पास से सूखे पत्तों पर पैर रखता हुआ निकल गया था। फिर उसी शाम में मिलने की बात कह वह तेजी के साथ वहाँ से चला गया। तभी उसके पीछे खड़ी रह गयी जैनाबादी ने गहरी साँस ली और उसके मुँह से निकला—'शाह-जहादे।'

उस मस्तूह बाला का मन अपने काबू में नहीं रह गया था। औरंगजेब उसके मन में आग लगा कर लौट गया था।

२

भले ही जैनाबादी ने न देख पाया हो पर औरंगजेब ने देख लिया था कि शाही बाग में उन दोनों को देखने वाला और कोई नहीं स्वयं दारा शिकोह था। दारा भी महल से बाग की हवा लेने निकल आया था। औरंगजेब इस बात को भलिभाँति जानता था कि उसके पिता बादशाह शाहजहाँ का सबसे अधिक स्नेह दाराशिकोह पर था। वह ही उसके बाद बादशाह बनने वाला था। क्योंकि चारों भाइयों में वही सबसे बड़ा था। पर औरंगजेब को यह बात प्रिय नहीं थी जीवन न जाने किस अशुभ क्षण में उसके मन में यह बात उठी कि मुगल साम्राज्य का यदि कोई उत्तराधिकारी है, तो वह स्वयं है। फलस्वरूप औरंगजेब अपने हृदय में छिपी हुई इस

महत्त्वाकांक्षा को जन्मते ही मार देने के लिये प्रस्तुत नहीं हुआ। उसने अपनी इस लालसा को दिन-दिन बढ़ावा दिया और पोषक तत्वों से जीवन प्रदान किया।

बाबर, हुमायूँ और अकबर द्वारा प्रतिपालित मुगल साम्राज्य उस समय वैभव के शिखरों को छू रहा था। मुगलों का भारत की अधिकांश भूमि पर अधिपत्य स्थापित हो चुका था लेकिन फिर भी साम्राज्य का अध्यक्ष सुख की नींद नहीं सो सकता था। आये दिन कहीं-न-कहीं से बगावत और विद्रोह की आवाज सुनाई देती थी। फलस्वरूप कभी स्वयं शाहजहाँ को युद्ध भूमि में उतरना पड़ता कभी उसके पुत्रों को। औरंगजेब देखता और अनुभव करता कि बादशाह सलामत दाराशिकोह को प्राय अपने पास रखता और औरंगजेब राजधानी से दूर था तो किसी युद्ध क्षेत्र में होता या दूर प्रान्त में व्यवस्था करने के लिये भेज दिया जाता। इससे धीरे-धीरे औरंगजेब के मन में असन्तोष बढ़ता गया। औरंगजेब यह भी देखता कि बादशाह की दृष्टि में दाराशिकोह के समक्ष उसका सम्मान नहीं के बराबर था। स्वाभिमानी और युद्ध-प्रिय औरंगजेब हृदय में उठती हुई इस आग को शान्त नहीं कर सका। वह जहाँ रहता जहाँ जाता हृदय में भरी हुई इसी आकांक्षा से प्रभावित रहता। मानो उसके मानस में ऐसा जहरीला धुआं घुट रहा था जिससे उसका कलेजा छिदा जा रहा था अवसर पाते ही प्राण बाहर निकलने के लिये आतुर हो जाता। कदाचित् यही कारण था कि औरंगजेब अपने परिवार के अधिकांश व्यक्तियों से बहुत कम मिल पाता। वह प्राय एकान्त में रहता। किन्तु उस बार, जब वह अपने महल में नहीं जाने की तैयारी कर रहा था तो अकस्मात अपनी माता मुमताज बेगम को उसने अपने सामने देखा। उस समय औरंगजेब कपड़े पहन चुका था। कमर में तलवार बाँध रहा था। तभी सामने मुस्कराती हुई माता को देख झुक कर सलाम किया और कहा—'तुम कैसे आयीं अम्मीजान!

मुमताज बेगम बेटे के और पास आ गई, बहादुर पुत्र के कन्धे पर हाथ रख कर बोली—'बेटा औरंगजेब! अब कैसा हो गया है तू! बात तो अम्मी से मन से नहीं मिला। कितने दिन से तू मेरे पास नहीं आया!

औरंगजेब कुछ क्षण मौन रहा। माता के समक्ष उसका सिर झुक गया।

किन्तु तभी मुमताज बेगम ने फिर कहा 'मेरे बाबहादुर बेटे! मुझे तुम पर गर्व है। तुम्हारे अब्बा भी तुम्हारी तारीफ करते हैं।

औरंगजेब ने सिर उठाया और कहा—अम्मीजान, बादशाह सलामत दारा को प्यार करते हैं मुझे नहीं!

यह सुनते ही मुमताज बेगम का माथा ठनका। उसने आँखों में आश्चर्य भर कर औरंगजेब की ओर देखा और कहा—'न बेटा! माँ-बाप के लिए सभी सन्तानें समान होती हैं। मैंने सभी को नौ मास पेट में रखा समान रूप से पाला-पोसा है। सभी के समान तेरे लिये भी मैंने कष्ट उठाया है।

औरंगजेब का मुँह उस समय कमरे के दरवाजे की ओर था। कमरे के एक कोने से धूपदान से सुगन्ध भरी धूप का धुआँ उठ रहा था। कमरा सुगन्ध से सुवासित था। परन्तु जब औरंगजेब ने माँ की बात सुनी तो लगा कि वह माँ की बात को सत्य मान कर भी, यह कहने के लिये प्रस्तुत नहीं था कि बादशाह की निगाह में उसका भी वही सम्मान है जो उसके अन्य भाइयों का। कुछ कहने की इच्छा करके भी वह मौन बना रहा। वह पेट की बात को मुँह पर नहीं ला सका।

मुमताज बेगम ने फिर उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा—'बेटा अब मैं बूढ़ी हो चली हूँ। लगता है थक गयी हूँ और अब तो जैसे मैं मौत को अपने सामने देख रही हूँ।

औरंगजेब को यह सुनकर झटका-सा लगा। उसने माँ की ओर देखा और बोला—'अम्मीजान, यह तो सभी के लिये है। तुम्हारे लिये तो मेरे भी लिये।

'मेरे बेटे! तुम हजार बरस जियो! अभी क्या देखा है तुमने! क्या भोगा है क्या पाया है! खुदा तुम्हारी उम्र दराज करे! मुमताज ने कहा 'देख तो तू कैसा बन गया है। तेरे सभी भाइयों के कमरे सजे रहते हैं पर एक तू है न खुद शानदार ढंग से रहता है न इस कमरे को सजाने—

है। मेरे बच्चे! तू बादशाह का लड़का है। शाहजादा है। रियाया तेरी ओर देखती है, तेरी ओर झुकती है, सलाम करती है। तुझे बहादुर मानती है!

औरंगजेब के अन्दर का विषाद उसकी आँखों में घुल गया वह बोला अम्मी, देखती हो इस संसार में यही सब पाने के लिये आदमी युद्ध करता है, इन्सान का खून बहाता है।

उत्साह-भाव में मुमताज ने कहा—हाँ हाँ यही तो औरंगजेब।

औरंगजेब ने कहा—'और इसी सबके लिए आदमी अपने भाई और स्वजनों को भी मरवा देता है। आदमी जिस रास्ते पर चलना चाहता है, उसे साफ करना भी पसन्द करता है। वह अपने विरोधियों को देखना नहीं चाहता।'

इतनी बात सुनी तो जैसे फिर मुमताज बेगम का श्वास रुक गया। उसे लगा कि जो रोग उस घर के पुरुषों को था वही इस औरंगजेब के शरीर और मन में व्याप्त है। क्योंकि मुमताज को इस बात का पता था कि अपने बड़े भाई खुसरू के लिए जो कुछ भी उसके पति खुर्रम (शाहजहाँ) ने किया उसे मन ही स्वयं मुमताज बेगम अपने मुँह से न कहे, परन्तु जिस बात को जहान जान चुका उसे भला कैसे छुपाया जा सकता था। मुमताज बेगम जानती थी कि खुसरू को मरवाने का काम शाहजहाँ का था। किन्तु जब उसने औरंगजेब की बात सुनी तो उसकी छाती पर घूँसा लगा। उसके मस्तिष्क में आँधी उठी और यदि वह औरंगजेब के कन्धे पर हाथ रख कर खड़ी न होती तो जो अन्धेरा उसकी आँखों छाया, और मस्तिष्क पर जो प्रतिक्रिया हुई उससे प्रभावित होकर कमरे के फर्श पर गिर पड़ती और बेहोश हो जाती।

तभी औरंगजेब फिर बोला—'अम्मी यह संसार ही ऐसा है। यहाँ किसी का कोई माता-पिता नहीं। जैसे सभी कुछ व्यापार है माया है छल है।

इतना सुनते ही मुमताज ने धीरे स्वर में कहा—'नहीं औरंगजेब!

तू गलत समझता है। तू इस संसार में आकर धोखा खा रहा है। माया के जाल में फँस रहा है। बोल तो तू किस आवाज में कह रहा है। क्या तू खुदा को भूल रहा है।

औरंगजेब जवान तो था ही क्रोधी भी था इसलिए जब उसने अपनी माँ से ऐसा उत्तर पाया कि वह मूर्ख है, गलत रास्ते पर जा रहा है तो तुरन्त ही, अपने माथे में बल डाल कर अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को आधी मींच कर माँ की ओर देखता हुआ बोला—अम्मी यह बात बादशाह सलामत से कहतीं तो ठीक था। उन्होंने जिन्दगी का एक बड़ा रास्ता पार किया है। उन्होंने सभी कुछ देखा और समझा है। समझती हो न बेटा जो कुछ बोलता है, वह माँ-बाप की बोली में बोलता है। बच्चा पहिले माँ-बाप के मकतब में पाठ पढ़ता है।

मुमताज ने कठिनाई से अपने गले का थूक निगला और कहा—'तो   तो   ?

'तो क्या अम्मीजान! मैदान बड़ा है। जिन्दगी का खेल सभी को खेलना है। मैं समझता हूँ कि मुझे दूर तक जाना है। कंटीले रास्ते को साफ करना है।

मुमताज ने फिर अपने स्वर में माधुर्य भरा और कठिनाई से नितान्त सदय बनकर कहा—तो तू क्या चाहता है औरंगजब।

औरंगजेब ने कहा—खुदा की नियामत। अपनी प्यारी अम्मीजान का आशीष।

मुमताज जरा अपने सूखे होंठों से मुस्करा दी—अरे यह तो तुझे मिलेगा ही मेरे बच्चे! यह तेरी चीज है। उस पर तेरा हक है। खुदा सबसे बड़ा मालिक है। और रही मैं अरे यह क्यों भूलता है औरंगजब कि तुझे मैंने नौ महीने अपने पेट में रखा था। बड़ी तकलीफ उठा कर तुझे पैदा किया था। बोल तो किसलिए? इसीलिये न कि मैं तेरी माँ बनूँ और तू मेरा बेटा! जब तू मुझे अम्मी कहता है तो जानता है मेरा कलेजा उछल-उछल पड़ता है। मेरी छाती फूल जाती है। इसी तरह जब मैं तेरे और भाइयों को

देखती हूँ तो मेरा सिर खुदा की इबादत में झुक जाता है कि उसने मुझे कैसी भाग्यवान बनाया जिसके शेर सरीखे चार बेटे· ·चारों ही अपनी सल्तनत के ऐरवाह सिपहसालार हाँ, औरंगजेब ! तू मेरी आँख का तारा है। तू मेरी आत्मा का एक ऐसा कोना है कि जिसके हिलने या टूटने से न मेरी आत्मा रहेगी न मैं। मैं तुमसे मिलने के लिये तड़प रही थी। पता है, मौलवियों के हाथों तुझे कई बार बुलवा भी चुकी थी। पर तू है कि 'अब आया अब आया', कह कर भी अपनी माँ के पास नहीं आया। तभी तो मुझे आज आना पड़ा। बेटा रूठ सकता है, पर माँ भला कैसे चुप बैठी रह सकती है। वह अपने सभी बेटों की सलामती चाहती है।

एकाएक फिर कमजोरी के मारे औरंगजेब के मुँह से निकल पड़ा—'माँ तुम दाराशिकोह को चाहती हो।

आह औरंगजेब ! मुमताज बेगम ने औरंगजेब का कन्धा छोड़ दिया। उसके पैर काँपने लगे। समीप था कि वह गिर पड़ती पर औरंगजेब ने अपनी माँ को पकड़ लिया और पलंग पर बैठाकर, वह स्वयं नीचे फर्श पर बैठता हुआ बोला—'माँ मैं अपनी गुस्ताखी के लिये शर्मिन्दा हूँ।

मुमताज बेगम ने हथेली पर ठोड़ी रख ली। तभी औरंगजेब फिर खड़ा हो गया। वह कमरे की खिड़की पर पहुँच गया। वहाँ से यमुना की धारा दिखाई देती थी। बरसात का मौसम होने के कारण यमुना चढ़ आई थी। औरंगजेब की जहाँ तक दृष्टि गयी, चारों ओर हरियाली थी। कमरे के नीचे ही बाग था जहाँ तरह-तरह के फूल खिल रहे थे। उनकी खुशबू औरंगजेब तक आ रही थी। किन्तु उस समय वह शाहजादा न बाग के फूलों की खुशबू ले पाया न यमुना की चढ़ती हुई जवानी देख पाया, अपितु वह खिड़की पर खड़ा होकर ही फिर अपनी अम्मीजान उस बड़े राज्य की मलिका मुमताज बेगम की ओर देखकर बोला—'अम्मी मैं यकीन दिलाता हूँ कि बादशाह सलामत के हर हुक्म की बजा लाऊँगा। मैं हुक्म अदूली नहीं करूँगा।'

मुमताज बेगम के चेहरे पर आया विकार पल भर में दूर हो गया। मुर्दे प्राणों में फिर बल आया। शरीर में चेतना पैदा हुई। अपने मन की

उसी अवस्था को ले, वह उठ खड़ी हुई और औरंगजेब के पास आकर बोली—'मेरे अच्छे बेटे ! आज तू मेरे सामने बैठकर भोजन करना । देख मैंने तेरे लिये वही खाना बनवाया है जो तुझे पसन्द है । बोल तो अब तू कहाँ जा रहा है ?

औरंगजेब—'काजीजी के पास ।

'ओह ! यही तो मुझ अच्छा लगता है कि तू खुदा की इबादत में मन लगाता है । सचमुच काजीजी बहुत अच्छे हैं बहुत काबिल हैं ।

औरंगजेब ने कहा—'अम्मीजान काजीजी मुझे सही ढंग से कुरान के मर्म समझाते हैं ।

'पर बेटा तुझे तो इतने बड़े मुल्क की रहनुमाई करनी है । कुरान, सूफी, या फकीर क्या इस जिन्दगी की बात करते हैं । अरे, वे तो संसार त्याग की ओर ही इन्सान को ले जाना चाहते हैं ।

माँ की बात सुनकर औरंगजेब मुस्कराया—हाँ अम्मीजान ! बात सही है । यही ठीक भी है ।

'न न मेरे औरंगजेब ! इस संसार को सूफियों की दरकार नहीं काम करने वालों की है । देख तो तेरे पुरखों ने कितनी जद्दोजहद और कुर्बानी करने के बाद इस देश में अपना पैर जमाया यह सल्तनत हासिल की । सूफी बनकर और जंगलों में बैठकर क्या इस दुनिया का निजाम ठीक तरह से चलाया जा सकता है । बेटा तब तो सभी काहिल कामचोर बुजदिल बन जायेंगे । ऐसे आदमी क्या इस संसार का निर्माण कर सकेंगे ! इस दुनिया को चाहिये बहादुर आदमी तुम जैसे औरंगजेब !

एकाएक गर्वित और आह्लादित औरंगजेब मुमताज बेगम के परों में झुक गया— मेरी अच्छी अम्मी ।'

मुमताज बेगम ने उसका माथा चूमते हुए कहा—'मेरा प्यारा औरंगजेब ! जां बहादुर !'

आगरे का शाही किला बनने में भले ही हिन्दुस्तान के बादशाह को आराममगाह या कदाचित वह जनता के लिये ईर्षा और जलन की भी वस्तु हो सकता था परन्तु सचाई यह भी कि वह किला स्वतः ही अपना सिर धुन रहा था। आये दिन वहाँ का समाज भयभीत और सशंकित बना रहता था फलस्वरूप उस दिन भी रात का पहला प्रहर था। किले की पुरानी लौंडियाँ बिस्तरों पर जा पड़ी थीं। बेगम भी अपने-अपने महलों में आराम कर रही थीं। किले के दूसरे हिस्से में पहरेदार सैनिक शराब के नशे में चूर उछलत-कूदते गा-बजा रहे थे। किले में आनन्द और आल्हाद की चारों ओर वर्षा हो रही थी। तमाम लौंडियाँ तारों भरे आसमान को देख रस-गीत गाने म तन्मय थी।

किन्तु इस हर्ष भरे मौसम में स्वयं मुगल सम्राट शाहजहाँ शाद न था। वह अपनी बीमार बेगम मुमताज के पास बैठा हुआ था। कई दिन बेगम को बुखार था। जब उसकी बेचैनी बढ़ी तो उसने बादशाह को बुलाया शाहजहाँ शराब और अफीम के नशे में था।

मुमताज बोली—'जहाँपनाह आज मेरा दिल घबड़ा रहा है। लगता है कि मेरी छाती के बीच फोड़ा निकल रहा है और अब उसकी पीड़ा बर्दाश्त के बाहर है।

बेगम फिर बोली— बादशाह सलामत मुझे दिखता है कि जिस प्यार से संसार की हम दोनों ने रचना की वह मिट जाने वाला है। मेरा समय अब समीप आ गया है।

बादशाह ने यह सुना तो उसका सारा नशा काफूर हो गया। उसका प्रफुल्ल चेहरा और उत्साही मन एकाएक ही मुरझा गया। वह कमरे में घूमने लगा। उसकी उंगलियाँ दाढ़ी के बालों में हरकत करने लगीं।

उसी समय मुमताज ने अपनी क्षीण वाणी में फिर कहा—'मैं मालिक मैं देखकर हैरान हूँ कि घर के चिराग से ही घर फुँक जाने वाला

है। आपने औरंगजेब को दूर के सूबे का सूबेदार बनाकर बना दिया पर उसका हौसला वहाँ जाकर भी दिन-पर-दिन बढ़ रहा है। देखती हूँ आप मुझसे कुछ नहीं कहते। समूचा दर्द अपनी छाती के नीचे दबाये बैठे हो। पर मैं भी सुन लेती हूँ कि जहाँपनाह अपनी औलाद से परेशान हैं। इसीलिये आजकल आप शराब अधिक पीने लगे हैं। अफीम की मात्रा भी बढ़ा दी है।

शाहजहाँ उस समय खिड़की के पास खड़ा तारा भरे आसमान की ओर देख रहा था। परन्तु उस समय निश्चय ही न उसकी आँखें तारे देख रही थीं न नाक कमरे में उड़ रही धूप की सुगन्ध पा रही थी। अपितु उसके मन और मस्तिष्क को बेगम की बात ने झनझना दिया था। सचमुच बादशाह स्वयं जिस बात से परेशान था दुःखी था उसीसे बेगम को प्रभावित देख उसका मन और अधिक आकुल हो गया। उसने मुमताज की ओर देखते हुए कहा—'समझाये औरतजात जानती हो न खुदा कुछ देता है कुछ लेता है। मैं इस शानदार मुल्क का बादशाह मैं इस किले में आराम से रहने वाला इन्सान क्या कभी समझ सका कि जिन्दगी का सन्तोष और सुख क्या है। शायद वह मैं अपने नसीब में लिखाकर नहीं लाया। उसने बेगम के पलंग की ओर पास आकर कहा—'हमारे पुरखों ने जिस शान और दिलेरी के साथ इस देश में आकर अपनी तलवार की चमक दिखाई, यहाँ अपना दबदबा स्थापित किया, वह शायद अब खत्म होने वाला है। यह कहते हुए शाहजहाँ ने गहरी साँस ली—तुमने भी यह सुन लिया खुदा की मर्जी।

मुमताज बोली—'जहाँपनाह, आप मुझसे कुछ छिपाते हैं। अब आप भी मुझसे दूर रहना चाहते हैं।

शाहजहाँ बोला—'न मेरी मुमताज! तू बीमार है। कमजोर है। मुझे मालूम है कि तेरा दिल मुलायम है। सल्तनत में तो ऐसे तूफान आते ही रहते हैं। इस धरती पर तो रोज ही युद्ध होते हैं। आदमी पैदा होते हैं, मरते हैं।

बेगम को बादशाह की यह बात पसन्द न आई, बोली—'जहाँपनाह यहाँ तो भाई ही भाई का दुश्मन बन रहा है। अधिकार और वैभव की भूख में इन्सान [illegible]

की फौज के पैर उखड़ने लगे। पर अजीब बात यह थी कि उस समय बादशाह ने इस समाचार पर अधिक ध्यान नहीं दिया क्योंकि उसे पता था कि मुगल फौज के समक्ष राजपूत अधिक देर तक नहीं टिक सकेंगे। दूध के उबाल के सदृश उनका क्रोध किसी भी समय समाप्त हो जायेगा। फिर शुजा को युद्ध क्षेत्र में जाने का आदेश दिया गया। एक कासिद बादशाह का खत लेकर औरंगजेब के पास रवाना कर दिया गया था। इसलिये शाहजहाँ उस ओर से निश्चिन्त था।

मुमताज बेगम को खाँसी उठी। बादशाह ने उसकी ओर देखकर कहा—'इस संघर्ष भरे जीवन में कुछ और नहीं मिलेगा मेरी मुमताज! इसलिए तुम बेचैन मत बनो। तुम्हारे बेटे बहादुर हैं। बेटे बड़े और बूढ़े भी हो जायें तब भी माँ-बाप की दृष्टि में वे बच्चे ही रहते हैं।'

मुमताज बोली—'मेरे मालिक! मेरी इच्छा है कि दाराशिकोह गद्दी पर बैठे।

शाहजहाँ ने कहा—'बेगम तुमने मेरे मुँह की बात छीन ली। यही होगा दारा बड़ा है समझदार है। वह इस्लाम और बादशाहत की हिफाजत कर सकता है।

मुमताज बोली—'पर यह भी कैसी बात है कि लोग औरंगजेब की तारीफ करते हैं। उसे इस्लाम का पुजारी मानते हैं।'

बादशाह के चेहरे पर विषाद की रेखा खिंच गई, लगा कि उसके मर्म के घाव को किसी ने कुरेद दिया बोला—'बेगम! औरंगजेब क्या चाहता है इसका मुझे पता है। उसके मन में बगावत के अंकुर उठ आये हैं। वह सल्तनत मे दरार पैदा करना चाहता है। दारा की जगह उसके मन में बादशाह बन जाने की हविश है। गहरी साँस लेकर मुमताज बोली—'हाँ मेरे मालिक! मेरे मन में यही काँटा है। औरंगजेब बचपन से ही कुछ दूसरे किस्म का लड़का रहा है। उसने सदा अकेले में रहना पसन्द किया है।

शाहजहाँ बोला—औरंगजेब में कुछ बातें तो बहुत अच्छी हैं। सबसे भाइयों से अधिक बहादुर है दृढ़ है संयमी है मजहबी है।

मुमताज बोली—'वह अपने भाइयों को देखकर कुढ़ता है। उनसे दूर रहता है। ऐसा आदमी अपने मतलब के लिये कुछ भी कर सकता है। वह हमारे दुश्मनों की संख्या बढ़ा रहा है।'

शाहजहाँ ने बाहर की ओर देखकर लौंडी को शराब लाने का आदेश दिया। एक प्याला शराब गले के नीचे उतार उसने हुक्के का घूँट भरा और उस खमीरी तम्बाकू का धुआँ कमरे की छत की ओर छोड़ते हुए कहा—'मुमताज बेगम जो आज जल रहा है रोशनी कर रहा है वह कल बुझेगा ही। इस मुगल सल्तनत का दौर भी क्या देर तक चलेगा।

मुमताज हंस पड़ी—ओह! कैसी बात करते हैं मेरे मालिक! बुढ़ापा आ गया है तो क्या अभी कुछ भूल जाना चाहते हैं। याद तो करिये बचपन से अब तक आपने कितने जंग किये।

बादशाह ने देखा कि राजपूताने से पकड़ कर लाई गई एक सुन्दर और जवान लौंडी बेगम के कमरे के बाहर खड़ी थी। वह आसमान में निकलते चाँद की ओर मुँह उठाये थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें भली लग रही थीं। बादशाह उठता हुआ बोला—अच्छा बेगम! तुम आराम करो। सुबह अपनी तबियत का हाल भेज देना।

बादशाह तेजी के साथ बाहर निकला, बाहर खड़ी लौंडी के गोरे गालों पर अपना हाथ रखता हुआ बोला—अच्छी हो जुबेदा!

जुबेदा ने कोर्निश की और सिर झुकाकर कहा—इनायत है, जहाँपनाह की।

४

सन्ध्या का समय । युद्ध-क्षेत्र । औरंगजेब शिविर में आराम कर रहा था । उसके निजी अनुचर ने झुक कर आदाब बजाते हुए कहा—'हुजूर शाही फर्मान लेकर आगरा से दूत आया है । हुक्म हो तो उसे पेश किया जाय ?

औरंगजेब एकान्त चाहता था । दिन भर वह जिस युद्ध में लिप्त रहा वह निश्चय ही थका देने वाला था । उस दिन औरंगजेब बाल-बाल बचा था । उसका हाथी घायल हो गया था । बाद में औरंगजेब जिस घोड़े पर बैठा उसे भी मार दिया गया । अवसर की बात कि औरंगजेब के सिपाही भी अपने प्राणों की रक्षा के हेतु इधर-उधर हो गये थे । परन्तु अदम्य उत्साही और अन्त तक युद्ध क्षेत्र में डटे रहने का अभ्यासी औरंगजेब न तिल भर हटा न अपने उत्साह को कम करता दिखाई दिया । इसका फल यह हुआ कि हारा हुआ दाँव उसने जीत लिया । उस दिन शत्रु-दल बुरी तरह परास्त हुआ । औरंगजेब के सैनिकों ने गाँवों में लूट की उन्होंने वहाँ धन का तो नाश किया ही जन का भी किया ।

ऐसे समय में दूत के आने का समाचार न तो उसे अच्छा लगा और न वह उन क्षणों में उससे बात करने के लिए प्रस्तुत हुआ । औरंगजेब ने कह दिया कि वह सुबह बात करेगा । बादशाह का पत्र भी अब नहीं पढ़ सकेगा ।

कदाचित् औरंगजेब के मन की उस दुरूह और विषम बनी हुई अवस्था का कोई और कारण हो या नहीं परन्तु यह अवश्य था कि जब वह शिविर की ओर लौट रहा था तभी एक गाँव के बाहर खून से लथपथ इन्सान की लाश उनके कटे हुए मुण्डों और उनके शरीर के विभिन्न अंगों के टुकड़ों को देखकर एक अजीब उल्लास के साथ मुस्कराया और अपने सैनिकों की ओर देख किंचित् हँस दिया था । किन्तु उसी समय घोड़े पर चढ़े चढ़े औरंगजेब एक करुण दृश्य को देख अचानक ही रुक गया । वह एकटक उसे देखने लगा । उसने देखा एक तरुणी जिसकी छाती में औरंगजेब के किसी सैनिक का भाला लगा था धरती पर पड़ी थी । उसका मुँह आसमान

की ओर था। निश्चय ही वह सुन्दर तरुणी कुछ समय पूर्व ही मार दी गई थी क्योंकि उसकी छाती से जो रुधिर प्रवाहित हो रहा था वह अभी ताजा और लाल-लाल था। यों स्त्री-पुरुषों का मरना तो औरंगजेब ने अपने जीवन में बहुत देखा था उसकी तलवार ने ही असंख्य व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया था किन्तु उस क्षण तो औरंगजेब ने यह भी देखा कि उस तरुणी की लाश के पास एक छोटा सा शिशु तड़प रहा था वह माँ-माँ चिल्ला रहा था। नहीं कहा जा सकता कि उस समय औरंगजेब के मन में दया आई—उस बच्चे को रोता देखकर अथवा एक दुश्मन को तड़पता देख हर्ष हुआ। लेकिन औरंगजेब अभी उस करुण दृश्य को देख ही रहा था कुछ निश्चय भी नहीं कर पाया कि तभी उसके सैनिकों का सैलाब पीछे से आया और उस माँ-माँ पुकारते हुए बच्चे को रौंदता हुआ आगे निकल गया। यह देख औरंगजेब ने इतने जोर से अट्टहास किया जितना शायद उसके पहले उसने कभी नहीं किया होगा।

शिविर में पहुँच और हाथ-मुंह धोकर वह नमाज पढ़ने लगा। कुरान की एक आयत का अर्थ जब उसने किया तभी उसे उस तरुणी और उसके बच्चे का ध्यान हो आया। कुरान की उस आयत का अर्थ था कि इन्सान सभी इन्सानों पर दया करे। सभी के प्रति सम्मान और आत्म भाव रखे। इतना पढ़ते ही औरंगजेब ने कुरान बन्द कर दी। बिस्तर पर पड़ते ही उसके मन में आया कि बुजदिल और दया करने वाला इन्सान युद्ध नहीं कर सकता। ऐसा आदमी संसार में न अपना रास्ता बना सकता है न बस सकता है। कदाचित् इस प्रकार की भावना औरंगजेब बहुत देर पहिले अपने मन में उतार कर रख चुका था। अपने इस विश्वास को वह किसी भी क्षण नहीं भूलता था। फलस्वरूप राजपूताने के एक गाँव की उस युवा नारी की मृत देह को देखकर, वह न उदास बना न उस बच्चे को देख उसके मन में ममता और दया का भाव ही उत्पन्न हुआ।

किन्तु इतना पाकर भी औरंगजेब अपने आप में शान्त नहीं था। यद्यपि दुश्मनों के प्रति वह क्रूर था, लेकिन जो देवैकी उस कन्या के समक्ष

उसके मन में उठी उससे वह किसी प्रकार भी अपना मुंह नहीं फेर सका। वह चाहता था कि उस दुर्बल भावना से वह दूर ही जावे।

तभी उसका अनुचर फिर तम्बू के अन्दर आया। चूँकि वह बहुत दिन से औरंगजेब के साथ था इसलिये औरंगजेब किस बात पर गुस्सा करता है और किस बात पर प्रसन्न होता है इसका उस निजी सेवक को ज्ञान था। अतएव अन्दर आते ही उसने औरंगजेब के पैरों को दबाने के लिये अपना हाथ रखा और बोला—'हुजूर, वह काशिद जो आगरा से आया है, बता रहा है कि वहाँ दाराशिकोह मुल्क की बादशाहत करेगा। बादशाह सलामत ने अपने वजीरों से यही कहा है।'

'और   और क्या कहता था?' औरंगजेब ने अधीरता से पूछा।

'हुजूर मैंने उससे यह भी सुना कि बादशाह सलामत आपको आगरा से बाहर ही रखना चाहते हैं। ताकि आप बादशाहत के सूबे आप बढ़ावें और दाराशिकोह   ।'

'नूरमहमद!'

'हुजूर!'

'जाओ काशिद को फौरन मेरे सामने पेश करो!'

'हुजूर, इसी वक्त? अब तो वह अफीम का बोझ भी चुका है। कम्बख्त ने शराब भी खूब पी ली है। कहता था—आज बहुत थका, थक गया।'

औरंगजेब ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने तुरन्त ही आदेशात्मक स्वर में कहा—'वह अभी आवे और बादशाह का खत पेश करे।'

निदान सेवक लौट चला। कुछ देर बाद ही अर्ध बेहोश काशिद को साथ लाया। औरंगजेब ने भारी स्वर में कहा—'क्या है तुम्हारे पास!'

'हुजूर, बादशाह सलामत का खत!' कहते हुए उसने खत आगे बढ़ा दिया। छोटा-सा खत था जिसे पढ़ते ही औरंगजेब ने तेज स्वर में कहा—और चुप! वह बोला—बादशाह सलामत चाहते हैं कि मैं जन्म भर नह

रहूँ। यों ही लड़ाई के मैदान में जिन्दगी काटता रहूँ। उसने काशिद को हुक्म किया—'जाओ, सुबह मिलना। बादशाह सलामत को मेरा पत्र देना।

शाही दूत लौट गया तो वह दोनों मुट्ठियाँ भींच कर तम्बू में घूमता हुआ बड़बड़ाया—'दाराशिकोह   खुदा   ओह, ये सभी आज मेरे दुश्मन बन गये हैं। मुझे पता है कि कम्बख्त दारा जोगी और साधुओं से मिलता है। धर्म की क्रांति का नारा लगाता है। दुष्ट समझता है कि हिन्दुस्तान के बादशाह का बड़ा लड़का क्या बना, दुनिया भर का सरताज हो गया। और बादशाह सलामत   तोबा! अक्ल मारी गयी है इतने बड़े देश के बादशाह की। उन्होंने समझा नहीं है कि उनके ही घर में पैदा हुआ यह औरंगजेब खुदा के रहम और करम पर भरोसा रखता है। खुदा ने चाहा तो मेरी तलवार के नीचे जो आयेगा वह नहीं बचेगा। इस दुनिया में भाई, बाप और बेटा माँ और स्त्री सभी अपने स्वार्थ की ओर देखते हैं   अपना रास्ता बनाना पसन्द करते हैं   "तो मैं भी"   यह औरंगजेब भी   ।

उस समय औरंगजेब निश्चित रूप से शान्त नहीं था। बाहर सैनिकों का स्वर गूँज रहा था। वे मतवाले सैनिक शराब पी-पीकर और गोश्त खाकर नाच और गा रहे थे। वे कूद-फाँद रहे थे। उनके स्वर जिस तेजी के साथ मैदान में गूँज रहे थे और दूर पहाड़ों से टकरा रहे थे उससे उनके उत्साह और उमंग में अवश्य ही चार चाँद लग गये थे। युद्ध-क्षेत्र के मैदान में कहीं घोड़े हिनहिना रहे थे और कहीं हाथी चिंघाड़ रहे थे मानो सैनिकों का यह काफिला जो भीलों का घेरा डाले हुए, अरावली पर्वत की उपत्यका में अपनी वह सुहावनी रात काट रहा था निश्चय ही गर्वित, आनन्दित और विजयोत्सव के भाव में भरकर अपने-आप में झूम उठा था।

किन्तु उस सैन्य-दल का सरदार, खूँखार और निर्मम औरंगजेब रात का एक पहर बीतने पर भी न खाना खा सका और न ही अन्य दिनों की तरह, अपने सैन्य दल का निरीक्षण करने के लिए बाहर जा सका। औरंगजेब—सचमुच ही चिन्तित था। उसे बादशाह से आदेश मिला था कि वह दल सहित

ही दक्षिण की तरफ आये। वहाँ कुछ विद्रोहियों ने मुगल सल्तनत का उखाड़ फेंकने के लिये प्रयत्न आरम्भ किया था। शुजा वहाँ जाकर अपनी फौज का एक बड़ा भाग कटवा चुका था। अवसर की बात कि उसी पत्र में बादशाह ने लिखा कि दारा भागरे से दूर नहीं किया जा सकता।

पत्र में उल्लिखित भाव को समझकर, बार-बार औरंगजेब के मन में आ रहा था कि वह बादशाह के आदेश को फाड़ दे और उसके टुकड़े वापस भेज दे। परन्तु औरंगजेब जल्दबाजी में ऐसा कोई कार्य करने के लिए प्रस्तुत नहीं था जिससे अन्त में उसी को मुँह की खानी पड़े। अतएव जो बात उसके मन में उठ रही थी उसको वह बाहर नहीं निकाल सका। उसने ताली बजायी और सेवक के आने पर कहा—'खाना लाओ।'

कुछ ही देर में खाना आ गया। औरंगजेब अभी खाना समाप्त करके उठा ही था कि उसने देखा एक साँप धीरे-धीरे उसके तम्बू में प्रवेश कर रहा है। यह देख औरंगजेब ने भाला उठाया और साँप का मुँह भाले से बींध दिया। साँप तड़पा और उसने दम तोड़ दिया। उसे तड़पते देख औरंगजेब ने कहा—'इस साँप की तरह ही मैं अपने रास्ते में आये प्रतिद्वन्द्वियों का समाप्त कर दूँगा। मैं भाई और बाप का लिहाज नहीं करूँगा। जिन्दगी के इस युद्ध में चाहे मैं बेगुनाहों को भी मार सकता हूँ तो मेरे उद्देश्य में बाधा डालने वालों को देर तक इस धरती पर नहीं रहने दूँगा।

वह तम्बू के बाहर निकला। आसमान में चाँद निकल आया था। रात सुहावनी थी। दिन में जितनी तेज गरमी थी रात में उतनी ही ठण्डक और खामोशी थी। धीमी-धीमी हवा चल रही थी। औरंगजेब आगे बढ़ गया और *सैन्य-दल के निकट जाकर देखने लगा कि सैनिक मद में झूम* रहे हैं और ऊँचे स्वर में गा-बजा रहे हैं। यद्यपि औरंगजेब को स्वतः गाना बजाना पसन्द नहीं था परन्तु इस समय तो वह अपने मन में दूसरी ही बात लिये था। उसने देखा कि सहस्रों सैनिक जो देखने में इन्सान थे खुदा की इबादत करते थे वास-बन्दोबस्त से दया ममता और प्यार करने की रीत जानते थे, वे सभी मानो मौत का टुकड़ा बनकर एक जानवर से दहा

ही जीवन बिता रहे थे। वे कुछ पैसों पर बिक कर उस मैदान में आ पड़े थे। दिन में सूरज की कड़कती धूप की तेजी में इन्हीं सैनिकों में से हजारों कट मरे थे और जो शेष थे वे भी मौत के बकरा बनकर कभी भी मर जाने के लिए अपनी जिन्दगी को गिरवी रख चुके थे।

मन में इतनी बात लाकर भी औरंगजेब रुका नहीं। वह कहीं खड़ा नहीं हुआ। उसने अपने साथ कोई अंग रक्षक भी नहीं लिया। वह अकेला ही उस मुगल शिविर को पार कर अरावली पर्वत के बिलकुल नीचे पहुँच गया। वहाँ उसने चाँदनी में देखा वह मन्दिर जिसे उसके सैनिकों ने खण्डहर बना दिया था। मूर्ति को तोड़ दिया था। लेकिन औरंगजेब का ध्यान उस मन्दिर की टूटी हुई प्रतिमा की ओर नहीं गया। उसने देखा कि उस मन्दिर में रहने वाले पुजारी का कटा हुआ शरीर अब भी वहीं पड़ा था। वह पुजारी यदि मुसलमान बन जाता तो बच जाता। परन्तु वह तो जिद्दी था। औरंगजेब के सामने ही दर्शन और आदर्श की बात कर रहा था। उसके इतना कहते ही अल्ला तुम्हारा भी है तुम्हारी इस दानवता का भी औरंगजेब ने उसका गला काटने का आदेश दे दिया था।

औरंगजेब वहाँ से चल पड़ा। उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। अकेला होता तो कदाचित् उसे चैन मिलता। पर चाँद के उजियारे में उसने देखा इन्सानों की लाशों का ढेर चारों ओर फैले पड़े थे। सियार और कुत्ते उन लाशों के ऊपर डोल रहे थे। कहीं-कहीं खून भी चमक रहा था। शिविर की ओर लौटते हुए औरंगजेब ने देखा कि उन हजारों मृतकों में कोई-कोई इतना सुन्दर और सजीला जवान था कि वह उस समय भी ऐसा लगता जैसे सो रहा है।

औरंगजेब तम्बू में प्रविष्ठ हुआ तो हठात् बोल पड़ा—'जैनाबादी!'
और उत्तर में जैनाबादी मुस्करा दी।

५

जीवन की वृहत्तर आकांक्षाओं, चिन्ताओं और दुश्मनों से घिरा औरंगजेब जैनाबादी को देखते ही सब भूल गया कि कुछ देर पूर्व उसके मनमें क्या था वह चिन्ताओं से घिरा था। किन्तु जैनाबादी ने औरंगजेब की परेशानी को महसूस किया और कहा—'मेरे सुलतान देखती हूँ तुम परेशान हो। इस रात में जाने कहाँ-कहाँ तुम फिर कर आते हो। लगता है कि तुम उस मैदान को पार करके आये हो जहाँ दिन में इन्सान ने इन्सान का खून किया था उसका गला काटा था जहाँ खून का दरिया बहा होगा, इन्सान के शरीर का मांस कीचड़ बन कर उस मैदान में दलदल की तरह फैल गया होगा। क्या जाने वहाँ अब भी कितने तड़प रहे होंगे, सिसक रहे होंगे दम तोड़ रहे होंगे।

औरंगजेब मुस्कराया—'तू तो शायरी करने लगी है जैनाबादी !

जैनाबादी ने अपने स्वर पर जोर देकर कहा—'हाँ मेरे सुलतान ! तुम्हें देखकर मुझे भी शायरी करना आ गया है। सच, मैं भूल जाती हूँ कि मेरे दिल का मालिक दो भावों पर एक साथ सवार होता है। प्यार भी करता है और इन्सान का खून भी। देखते हो तुम्हारे जूतों में कितना खून लगा है। मुझे लगता है तुम्हारे इन जूतों से कितने इन्सानों के कलेजे कितने दिल कुचले गये होंगे उनके जर्रे तुम्हारे पैरों से चिपके होंगे और चिल्ला उठे होंगे' ।

एकाएक औरंगजेब ने तेज स्वर में कहा—'जैनाबादी !

'मेरे दिलरुबा मेरे दिल के मालिक ! क्या सच तुमने उन घायल दिलों की आवाज नहीं सुनी। तुम्हें नहीं मालूम हुआ कि उनकी तड़प उनकी टीस और कराहें' ।

औरंगजेब ने बात का प्रसंग बदला और कहा—'पर यह बता जैनाबादी इस सागर में क्या है शराब ? क्यों ? किसलिए ?

जैनाबादी ने कहा—'यह शराब मैं तुम्हें पिलाना चाहती हूँ मेरे

शराब ! तुम शराब नहीं पीते न इसीलिये मुझे शक होता है कि तुम जिस तरह इन्सानों का—काफिरों का सिर काटते हो कहीं उसी तरह मुझे भी न मार डालो। मैं अब तुमसे डरती हूँ !

औरंगजेब ठहाका मार कर बोला— वाह वाह ! तू कितनी डरपोक है, जैनाबादी।

किन्तु कुछ विद्रूप सा भाव लेकर जैनाबादी ने कहा— जानते हो, मैं औरत हूँ प्रेम की भूखी हूँ।

स्वर को अत्यन्त मधुर बनाकर औरंगजेब बोला—'न न जैनाबादी ! तू मेरे दिल की मलिका है। बोल तो मैंने तेरा कौन-सा कहना टाल दिया।

तुरन्त ही जैनाबादी ने कहा—'हां मेरे मालिक ! इतना मुझे पता है, पर आज मुझे परख भी लेना है। तुमने शराब न पीने की जिद् की है न तो मैं भी आज जिद् लेकर आई हूँ कि तुम्हें शराब पिलाऊँगी। कठोर औरंगजेब इतने पर भी शांत रहा और मुसकरा दिया। उसने कहा— तेरा यह पहचान का तरीका गलत है जैनाबादी।

जैनाबादी ने जैसे अपनी बात पर अड़ कर कहा—'मैं औरत हूँ अक्ल ही इतनी है मेरी !

औरंगजेब बोला— नहीं तू समझदार है। जानती है न कि यह औरंगजेब तुझे प्यार करता है। तो तू भी इसका दिल परखने पर तुली है। इसे शराब पिला देना चाहती है जब कि समझती है कि मैं शराब कतई नहीं पीता। इसे इन्सान के पीने योग्य पेय नहीं मानता। इसे पीकर इन्सान अपना होश खो बैठता है।

जैनाबादी ने कहा—'तो जब तक तुम्हें होश रहेगा तुम इस जैनाबादी के नहीं बन सकते इसे अपना दिल नहीं दे सकते। क्योंकि तुम्हारा तो काम ही है लड़ना इन्सान का सिर काटना। भला युद्ध को छोड़ तुम्हें और क्या सूझता है। लगता है कि इन्सान तुम्हें प्यारा नहीं लगता। उसकी गन्ध तुम्हें नहीं सुहाती। फिर भला जैनाबादी ही कैसे तुम्हारी बन सकती है। तुम्हारे

दिल में अपने लिए क्या ऐसे जगह बना सकती है ? यह जैनाबादी न कभी नहीं।

औरंगजेब गम्भीर था। उसका मुँह तम्बू की छत की ओर था। उसकी ओर देखकर बोला—'न जैनाबादी ! यह आदमी बड़ा फितरती है। यह एक साथ कई काम करता है। प्रेम और घृणा प्यार और खून करना इसे एक साथ आता है। लड़ना तो मेरा काम था कर्तव्य था। पर तुमसे यह प्यार करना इस्लाम की जिन्दगी की तरह मेरा भी एक ऐसा स्वभाव है मेरे जीवन की एक ऐसी मांग है कि जिसकी ओर से मैं भी आँख नहीं फेर सकता। ऐ जैनाबादी जब तू जब मेरे पास आती है मुझसे जो प्यार की बातें करती है तो मेरे मन में आता है कि तेरे ऊपर दुनिया की समूची दौलत समूची सल्तनत कुर्बान कर दूं तुझे अपने हृदय के ऐसे कोने में छुपा दूं जहाँ दुनिया का कोई भी आदमी तुझे न देख सके न पा सके न मुझसे छीन सके।

जैनाबादी हँसी—वाह-वाह ! क्या फुसलाने की बात करने लगे, शहजादे ! मैं जानती हूँ कि आदमी जब औरत से अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है तो उसे सिर पर उठा लेता है, उस पर कुर्बान हो-होजाना चाहता है। पर जहाँ उसके स्वार्थ का पेट भरा तो उसी औरत को यह आदमी दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल कर फेंक देता है। यह कहते हुए जैनाबादी सहज भाव से मुसकराई—'मैं जानती हूँ कि तुम्हें भी गुस्सा जल्दी आता है। क्या जाने कब तुम इस जैनाबादी का पेट अपनी कटार से फाड़ दो और इस तम्बू से बाहर मैदान में फेंक दो।

तभी औरंगजेब ने तेज स्वर में कहा—'तू पागल हो गयी है जैनाबादी, कैसी बातें करती है। मुझे मूर्ख समझती है।

किन्तु तुरन्त ही जैनाबादी ने कहा—'नहीं मेरे सिरताज ! तुम खुद जानते हो इस औरत की औकात ही कितनी है ! और फिर मैं मैं नाचीज लौंडी हूँ कभी भी तुम्हारी निगाह से उतर सकती हूँ। आज सोने का ढेला हूँ तो कल मिट्टी बनाकर भी लातों की ठोकरों में रास्ते के बीच चौराहे पर फेंकी जा सकती हूँ।